प्रौढ़ शिक्षा माला, संख्या २२६
भारत सरकार द्वारा स्वीकृत

ला०
१८६
(२८)

संसार के सात आश्चर्य

भाग १

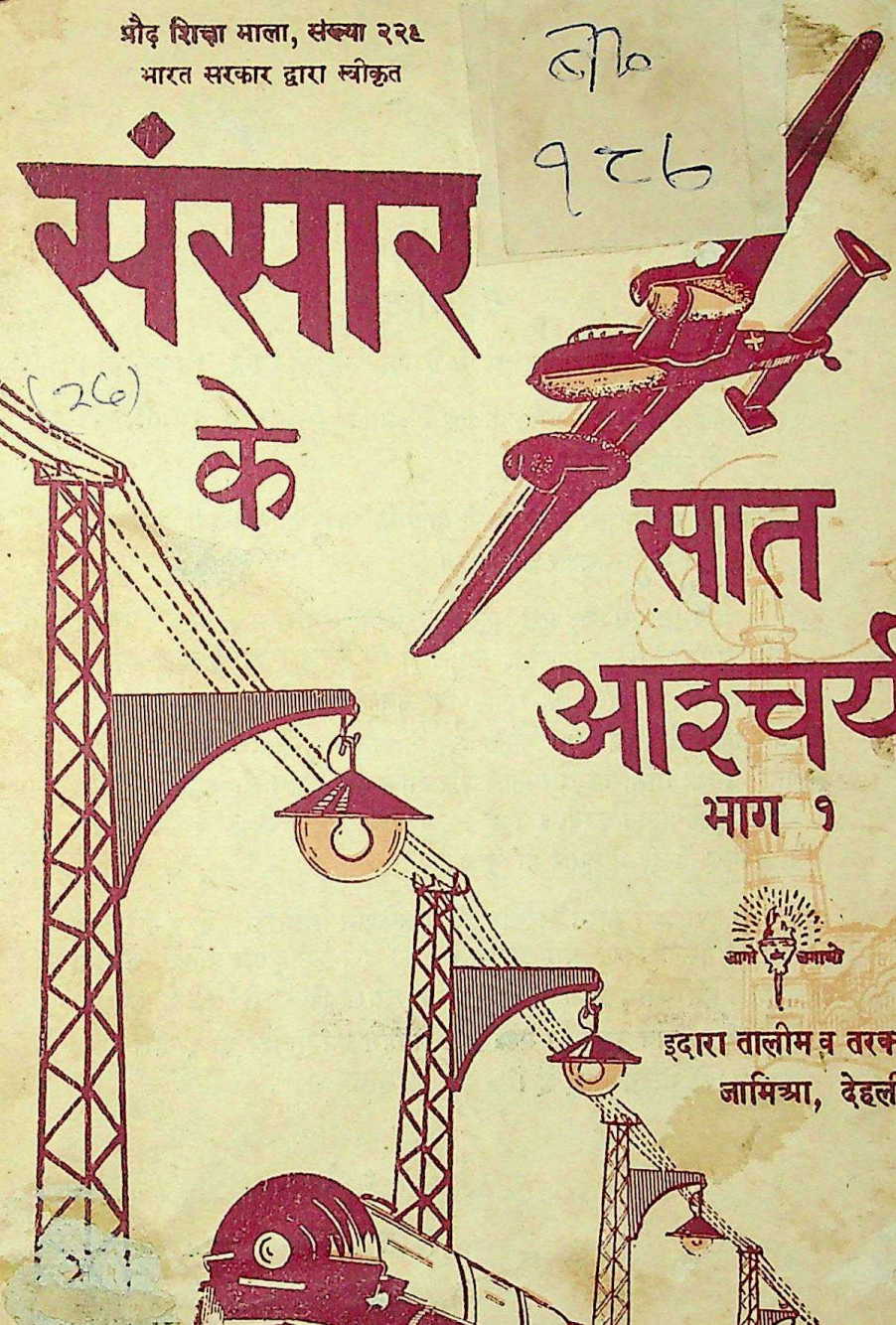

आगे बढ़ो बढ़ाओ

इदारा तालीम व तरक्की
जामिआ, देहली

दो शब्द

इस पुस्तक-माला का उद्देश्य है कि कम पढ़े-लिखे सियानों में :

(१) पुस्तकें, अखबार और पत्रिकायें आदि पढ़ने और समझने की योग्यता बढ़े।

(२) जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातों के बारे में बुनयादी जानकारी और शब्द-भण्डार प्राप्त हो।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, इदारा तालीम व तरक्की जामिआ (प्रौढ़ शिक्षा-विभाग, जामिआ मिल्लिआ) देहली ने १० साल तक सियानों में काम करने के बाद उनकी शिक्षा का एक पाठ्य-क्रम तयार किया है। वह इस पाठ्य-क्रम के अनुसार सियानों की रुचि और लाभ, उनकी मानसिक योग्यता और शौक को ध्यान में रखकर छोटी-छोटी पुस्तकें प्रस्तुत करवा रहा है। अब तक इस विषय की ३०० पुस्तकों के मसौदे हिन्दी में तैयार हो चुके हैं।

१९५० में भारत सरकार की एजूकेशन मिनिस्टरी ने हमारे इस काम को पसन्द किया और इन पुस्तकों की दस दस हज़ार प्रतियां छापने के लिये हमें आर्थिक सहायता दी। यह सारी की सारी प्रतियां सरकार ने ले लीं। अब उन्हीं की मेहरबानी से हम इन पुस्तकों को दोबारा छाप कर आपको भेंट कर रहे हैं।

डायरेक्टर

इदारा तालीम-व-तरक़्क़ी

जामिआ, देहली

संसार के सात आश्चर्य

पहला भाग

आइए आज आपको प्राचीनकाल की सात अजीब चीज़ों की सैर करायें। इन्हें दुनिया के सात आश्चर्य कहा जाता है। दुःख है इन सातों में से केवल अब एक ही बाक़ी बचा है। बाक़ी को आँधी, पानी और भूचाल ने इस तरह मिटा डाला कि खोजने पर भी उनका निशान मुश्किल से मिलता है।

१—मोसोलिस की समाधि

सवा दो हज़ार साल हुए होंगे कि एशियाकोचक में एक बादशाह राज करता था। राजा का नाम मोसोलिस था और उस की रानी का नाम था आरटीमेजिया। राजा-रानी एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे। ईश्वर की इच्छा, कुछ दिनों बाद राजा मोसोलिस मर गया। राजा के मरने से रानी को बहुत बड़ा दुःख पहुँचा।

कुछ समय बीतने पर जब रंज जरा कम हुआ तो अरटीमेजिया ने मौसोलिस की कबर पर एक ऐसी समाधि बनवाने का निश्चय किया जिस का जवाब दुनिया में न मिल सके। उस समय दुनिया-भर में यूनान के राज और पत्थरों पर बेल-बूटे बनाने वाले प्रसिद्ध थे। बस रानी ने यूनान के सब से अच्छे और चतुर कारीगरों को बुलाया और उनके सामने रुपयों का ढेर लगाकर कहा कि, जितना चाहो उस में से खर्च करो लेकिन मोसोलिस की एक ऐसी यादगार बना दो जिस से राजा और रानी के प्रेम और मोहब्बत की कहानी संसार में अमर हो जाये और लोग उन्हें हमेशा याद रखें।

समाधि की जगह के लिये हेलाकारनसस की एक चौड़ी सड़क पसन्द की गई। हेलाकारनसस यूनान का एक बहुत पुराना शहर था। और मोसोलिस ही के राज में था। पिछली शताब्दी में जब जमीन की खुदाई की गई थी तो इस शहर का पता चला था।

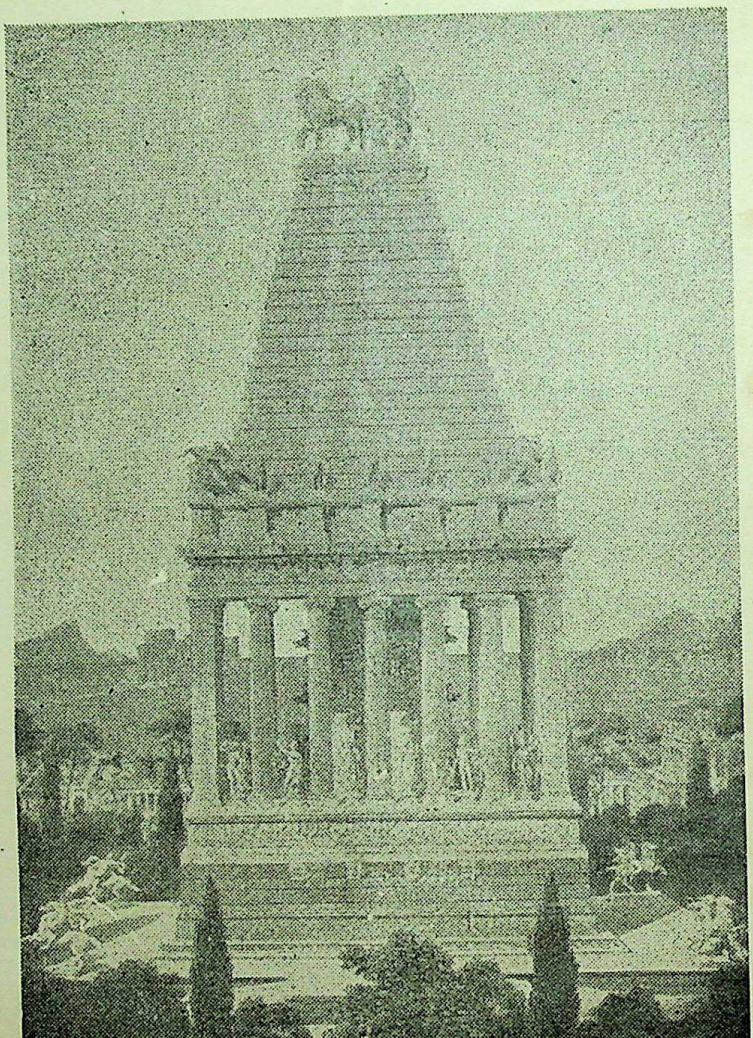

समाधि का काम आरम्भ हुए अभी दो साल भी नहीं हुए थे कि अरटीमेजिया भी मर गई। जिन लोगों के जिम्मे समाधि बनवाने का काम था उन्होंने आपस में सलाह की और यह तय किया कि काम जारी रहना चाहिये। और अरटीमेजिया की इच्छा पूरी की गई और एक विशाल समाधि बन कर तैयार हो गई। मगर समय का फेर है कि अब वह बिल्कुल मिट चुकी है। अब इस विशाल समाधि के केवल कुछ टूटे-फूटे पत्थर अजायबघरों में पड़े हुए हैं, लेकिन उस की शान व शौकत या वैभव का हाल पुस्तकों में अभी तक उसी तरह मौजूद है।

यह समाधि एक मंजिल की थी। इस का फर्श हरे पत्थरों के सुन्दर खड़नजे से बना था। बाकी सारी इमारत सफ़ेद संगमरमर की थी। छत्तीस हलके-फुलके और सुडौल खम्भों पर एक गुम्बद बनाया गया था। खम्भे इतने हलके-फुलके थे कि दूर से दिखाई भी नहीं देते थे। और गुम्बद हवा में लटका हुआ मालूम होता था। गुम्बद के ऊपर बादशाह का चार घोड़ों वाला रथ था। रथ आकाश को छूता हुआ मालूम होता था। रथ में मोसोलिस और अरटीमेजिया बैठे दिखाये गये थे। रथ में मोसोलिस और अरटीमेजिया की सुन्दर मूर्तियों के अलावा इमारत में और भी बहुत-सी सुन्दर और कोमल मूर्तियां स्थापित की गई थीं। समाधि का घेरा १३३ गज १ फुट और कुल ऊंचाई ४६ गज़ २ फुट थी। इमारत कुछ बड़ी तो नहीं थी पर कोमल इतनी थी जैसे कमल का फूल। समाधि के दरवाजे पर

एक बड़ा-सा पत्थर रख दिया गया था ताकि चोर-उचक्के अन्दर न घुस पायें।

लगभग आठसौ बरस पहले बारहवीं शताब्दी में ईसाईयों ने बदरम शहर पर अधिकार कर लिया तो अपना किला बनाने के लिये इस प्रसिद्ध और सुन्दर इमारत के पत्थर उखड़वाने शुरू कर दिये और सन् १५२२ ई० में प्रेम और मोहब्बत की इस यादगार का निशान भी बाक़ी न छोड़ा।

२—वृहस्पति की मूर्त्ति

प्राचीन काल में यूनान वालों को अपने शरीर को मजबूत और सुन्दर बनाने का बहुत शौक था। इस लिये व्यायाम और खेल-कूद उन के जीवन का एक खास अंग बन गया था। उनका "ओलम्पिया" का खेल-कूद का मैदान बहुत प्रसिद्ध है। किसी समय यहां पर हर पाँचवें साल एक बड़ा मेला लगता था। बहुत से लोग खेल-कूद और बहादुरी के हुनर औ करतब दिखाने के लिये यहाँ इकट्ठे होते थे। यह मेला छः-सात दिन तक रहा करता था और जो लोग मुकाबले में जीत जाते थे उन्हें जैतून की पत्तियों का ताज पहनाया जाता था। यह ताज यूरोप में विजय की निशानी समझा जाता है।

इस मैदान के एक भाग में एक देवता का मन्दिर था जिसे यूनानी जिफस कहते थे। रोम (इटली) में इसी देवता का नाम ज्युपीटर (वृहस्पति) था। यह मन्दिर लेबन नायक एक राजा ने महात्मा ईसा मसीह से छः सौ साल पहले बनाया था। यह मन्दिर सौ साल में तैयार

हुआ था। इसके एक-एक खम्भे का घेरा सात-सात फुट था। पूर्वी भाग में इक्कीस मूर्तियां स्थापित थीं। पश्चिमी हिस्से की दीवारों पर बहुत-सी सुन्दर तस्वीरें बनाई गई थीं। फर्श रंगीन पत्थरों का था और छत सफेद संगमरमर की।

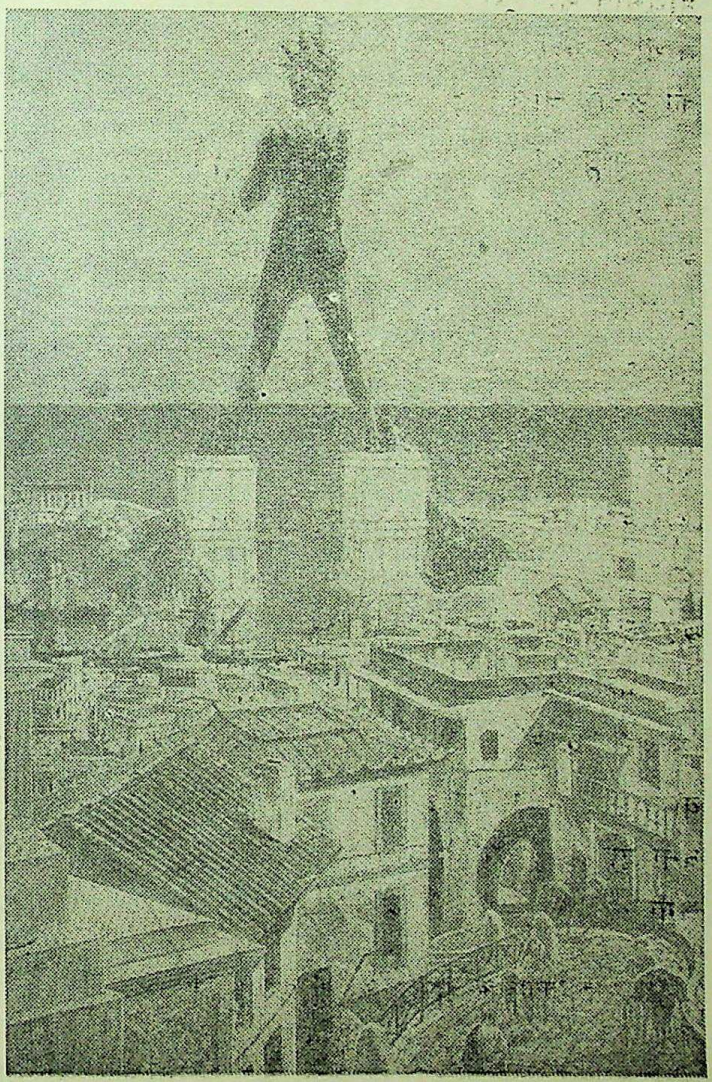

मगर सब से विशाल चीज वृहस्पति[१] की मूर्ति थी। जिसे फैडस नामक राज ने पांच साल के कड़े परिश्रम के बाद तैयार किया था। इस मूर्ति को देखने पर यह मालूम होता था कि (जिफस) वृहस्पति तमाम देवताओं से अधिक बुद्धिमान् शक्तिवान् न्यायी, कमजोरों और गरीबों का साथी है और ऐसा कोई गुण नहीं जो उस में न हो। उस की ऊंचाई चालीस फुट थी और सिर छत तक पहुँचता था।

मूर्ति का ढांचा पत्थर और लकड़ी का था। गोश्त की जगह हाथीदांत और कपड़े के बदले सोना लगाया गया था। जिस तख्त पर यह मूर्ति रखी हुई थी वह सोने हाथीदांत, और आबनूस का बना हुआ था। मूर्ति में हीरे, जवाहरात, जैसे मूल्यवान पत्थर जड़े हुए थे। पांवों में ठोस सोने की जूतियां थीं। दाहिने हाथ में विजय की देवी का मूर्ति थी। बायें हाथ में एक डंडा था जिस पर एक "बाज' बैठा हुआ था। यह डंडा जिफस की हुकूमत का निशान था। सिर पर ज़ैतून की पत्तियों का ताज था जो विजय का चिन्ह था।

मगर अब इस विशाल मूर्ति का कहीं चिन्ह भी नहीं मिलता। या तो प्राचीन पुस्तकों में इस का कुछ हाल मिलता है या कुछ पुराने सिक्के मिले हैं जिन पर इस मूर्ति की तस्वीरें बनी हुई हैं। कहते हैं चौथी शताब्दी में एक जबरदस्त आग लगी थी जिसमें मन्दिर और मूर्ति सब भस्म हो गये।

---

१. एक सितारे का नाम है जिसे यूनान वाले देवता मानते हैं।

३—मिश्र के हरम

दुनिया के सात आश्चर्यों में मिश्र के हरम सबसे प्राचीन हैं और अजीब बात यह है कि सातों में केवल यही अब शेष हैं। यह हरम असल में मिश्र के राजाओं की समाधियां हैं। रास्तों और कमरों के सिवा यह बिलकुल ठोस हैं और इनके पत्थरों के जोड़ ऐसी सफ़ाई से लगाये गये हैं कि पता ही नहीं चलता। आज हमारे पास इतनी बड़ी-बड़ी और अच्छी मशीनें हैं फिर भी हम उन हरमों जैसी सुन्दर और विशाल इमारतें नहीं बना सकते।

इन हरमों में सबसे विशाल हरम खोफ़ौ बादशाह का है, जो आज से पौने छः हज़ार बरस पहले मिश्र में राज्य करता था। यह हरम तेरह एकड़ ज़मीन पर बना हुआ है। इसकी ऊँचाई पहले चार सौ अस्सी फुट थी मगर अब चार सौ पचास फुट रह गई है। लोगों ने हिसाब लगाया है कि इसके बनाने में उन्नीस लाख मन मसाला ख़र्च हुआ होगा। और सत्तर २ मन के दो करोड़ तीन लाख पत्थर लगे होंगे। मालूम नहीं इतने सारे और इतने बड़े-बड़े पत्थर के टुकड़े वहाँ तक लाये किस तरह गये होंगे और उन्हें इतनी ऊँचाई तक कैसे पहुँचाया गया होगा।

पुरानी किताबों से पता चलता है कि केवल पत्थर उठाने के लिये एक लाख मज़दूर काम पर लगाये गये थे। इसके अलावा एक लाख चालीस हज़ार राज़ और कारीगर बीस बरस तक काम करते रहे, तब कहीं यह हरम तैयार हुआ।

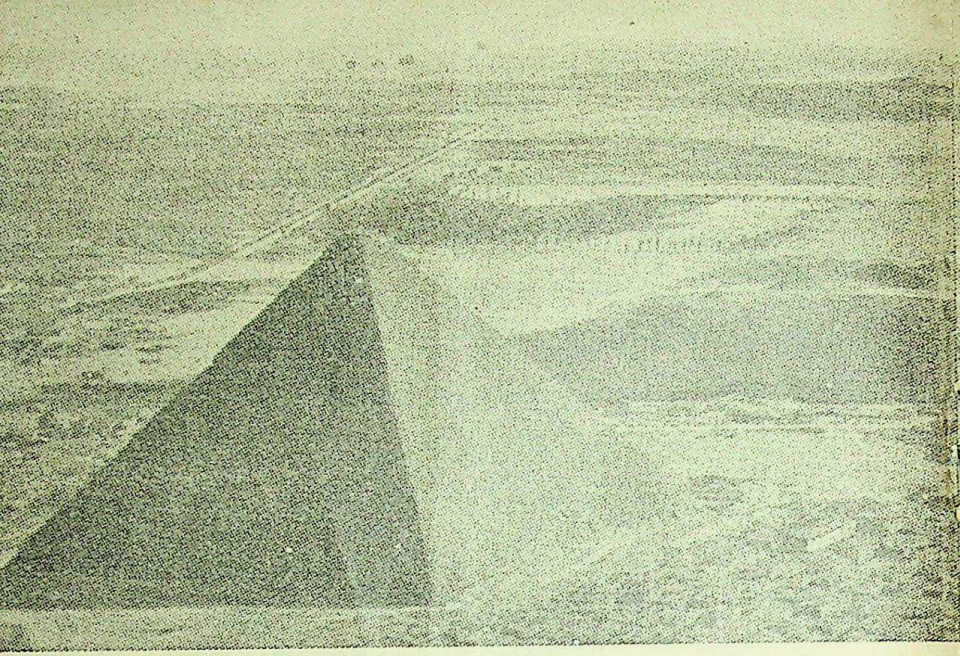

इस हरम का रास्ता एक तंग सुरंग की तरह तहख़ाने तक जाता है। इस तहख़ाने में बादशाह का ताबूत था। तहख़ाने का दरवाज़ा कुल साढ़े तीन फुट चौड़ा है और इतना ही ऊँचा है। मगर इसकी मोटाई दस फुट है। शायद चोरों से बचाने के लिए ऐसे मज़बूत दरवाज़े बनाए गए होंगे। इस तहख़ाने के ऊपर पाँच कमरे और हैं ताकि राजा के कमरे पर इमारत का बोझ अधिक न पड़े।

मिश्र के हरमों की शकल नीचे से चौकोर और ऊपर पहुँच कर नुकीली है। इनमें बहुत-सी क़ीमती और रोज़ मिश्र के काम में आनेवाली चीज़ें मिली हैं। मिश्र के रहने वालों का विचार था कि मरने के बाद आदमी फिर जीवित होता है और उसे इन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है। इसीलिये वे शव के साथ वह चीज़ें रख देते थे जिनकी जीवन में

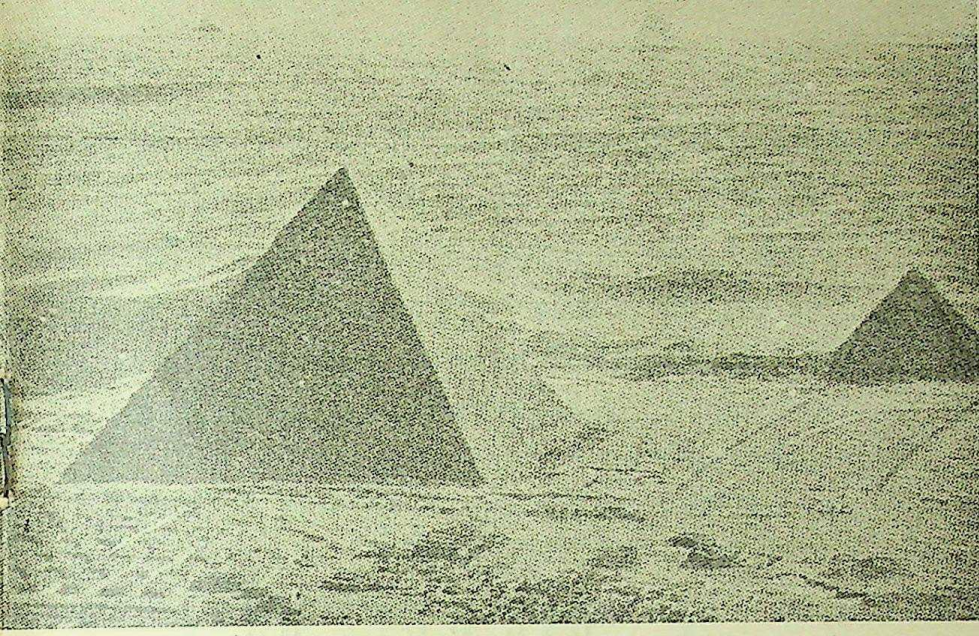

ज़रूरत पड़ती है और इसीलिये मरने से पहले ही मिश्र के बादशाह अपने लिये विशाल हरम तैयार करा लेते थे। पहले इस हरम पर चिकना प्लास्तर था और कोई आदमी उस हरम पर नहीं चढ़ सकता था मगर अब यह प्लास्तर बिलकुल उखड़ गया है।

मिश्र के तपते हुए आकाश के नीचे यह विशाल हरम छः हज़ार बरस से खड़ा हुआ है और मालूम नहीं कब तक खड़ा रहेगा।

इस हरम के पास ही अबुलहोल की एक बहुत बड़ी मूर्त्ति है। यह रेगिस्तान की एक विशाल चट्टान को छाँट-कर बनाई गई है। इसकी आँखें रेगिस्तान के पार टकटकी बाँधे देख रही हैं। तपते हुए रेगिस्तान से रेत की ज़बर-दस्त आँधियाँ आकर अबुलहोल और खोफो के हरम से सिर

मार कर चिल्लाती और शोर करती हैं। मगर अबुलहोल की आँखों में सदैव एक ही-सी शान्त हँसी विराजती रहती है। जैसे कि वह समय के देवता से कह रही हो--यह दनदनाती हुई आँधियाँ और भयंकर तूफ़ान मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते और सुन लो कि तुम खोफो के हरम को भी इतनी आसानी से नहीं मिटा सकते, क्योंकि मैं उस का रखवाला हूँ।"

दुनिया के यह सात आश्चर्य उस समय के हैं जिसे पुराना ज़माना या प्राचीनकाल कहते हैं।

४--बाबुल के हवाई बाग़

बगदाद से पचास मील की दूरी पर फरात नदी के किनारे एक बहुत प्राचीन शहर के खंडहर हैं। किसी समय में लोग इस सुन्दर शहर को दूर २ से देखने आया करते थे। इस का नाम बाबुल था। महात्मा ईसा मसीह से छः सौ साल पहले यहां बख़तनज़र नाम का एक राजा राज्य करता था। वैसे तो उस ने बाबुल में बहुत-सी सुन्दर २ इमारतें बनवाईं मगर बाबुल का हवा में लटके हुए बाग़ की गिनती संसार की सात अजीब चीजों में होती है।

नबुखुदनजर की रानी पहाड़ी प्रदेश की रहने वाली थी। बख़तनजर जब उसे ब्याह कर फरात के मैदान में लाया तो रानी बहुत उदास रहने लगी। वह तो पहाड़ और जंगलों में विचरने वाली हिरनी थी। भला फरात के सपाट मैदान में उसका जी कैसे लगता। बख़तनजर ने अपनी महारानी का जी बहलाने के लिये, सपाट जमीन

पर पहाड़ और जंगल का दृश्य उपस्थित करने के लिये हवाई बाग़ बनवाये।

पत्थर के कई मंजिले चबूतरों पर ये बाग़ लगाये गये थे। ये वास्तव में हवा में लटके हुए नहीं थे मगर दूर से देखने से यही धोखा होता था। हर ऊपर का चबूतरा नीचे के चबूतरे से छोटा होता गया था। और इस तरह यह चबूतरे ऊंचे होते होते साढ़े तीन सौ फुट की ऊंचाई तक पहुंच गये थे। एक एक मंज़िल की ऊंचाई पचहत्तर फुट थी और बाग का कुल घेरा चार एकड़ था। दीवारों को नमी से बचाने के लिये चबूतरों की छत पाट कर उन पर पिघला हुआ सीसा फैला दिया गया था और हर चबूतरे पर इतनी मिट्टी डाल दी गई थी कि पेड़ और पौदे सरलता से उग सकें। सब से ऊंची मंजिल पर एक तालाब था जिसमें फरात नदी से पानी आता था। सारे बाग़ की सिंचाई इसी तालाब से होती थी। बाग़ में तरह-तरह के मेवे, फलों और फूलों के पेड़ और पौदे थे। फूलों की खुशबू से सारा बाग़ महकता रहता था। हर चबूतरे पर बड़े-बड़े

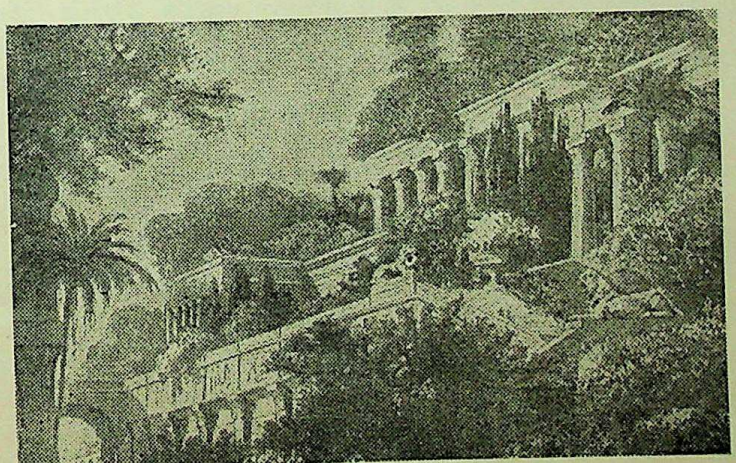

कमरे थे जो मन बहलाने के सामानों से सजे रहते थे। बाग की दीवारों पर देवताओं के रंगीन और सुन्दर चित्र थे। हरे भरे मैदानों के बीच-बीच में छोटे २ तालाब थे। तालाबों के चारों और रंगीन पत्थरों का फर्श था। और हर तालाब का पानी रंगीन था। किसी का लाल, किसी का सुनहरा, किसी का हरा, किसी का नीला।

ऐसा वह प्रसिद्ध बाग था जो एक बादशाह ने अपनी रानी को प्रेम की निशानी और भेंट के तौर पर दिया था। लेकिन जमाने ने इस बाग़ ही क्या, पर बाबल के इस सारे शहर ही को इस तरह मिटाया कि सैंकड़ों वर्ष तक लोगों को यह भी पता न चल सका कि ये और बाबुल शहर और बाग़ थे कहां पर सन् १९०३ ई० में ज़मीन खोदन पर इस बाग़ के कुछ चिन्ह मिले हैं।

५—डायना का मन्दिर

रौमियों का विचार था कि डायना जूपिटर, (वृहस्पति) की बेटी है। वे इस देवी को बहुत मानते थे। और यह समझते थे कि उन के बाल-बच्चे, खेती-बाड़ी और सारी खुशहाली डायना ही की कृपा से है। यद्यपि वैसे तो वह सारी दुनिया की मां है।

डायना का मन्दिर तुर्की में था और उस समय के एक बहुत बड़े कारीगर डेनुकर पटस ने इफिसिस शहर से एक मील की दूरी पर उसे बनाया था। महात्मा ईसा मसीह से ६६० बरस पहले यूरोप की एक जंगली जाति ने इस शहर पर हमला किया और इस विशाल मन्दिर को बरबाद

कर दिया। इस के बाद लोग यह भी भूल गये कि यह मन्दिर कहां बना था। पिछली शताब्दी में जमीन खोद कर इस का पता लगाया गया है।

किसी समय मन्दिर के चारों ओर सुन्दर बाग थे। मन्दिर न केवल बहुत सुन्दर ही था बल्कि लम्बा-चौड़ा भी बहुत था। इस की लम्बाई में दोनों ओर बीस-बीस खम्भे थे और चौड़ाई में आठ-आठ। हर खम्भे का घेरा छः फुट और ऊँचाई साठ फुट थी। इन खम्भों के निचले हिस्सों पर सोना मँढा हुआ था और ऊपरी हिस्सों पर देवताओं और बहादुरों की रंगीन तस्वीरें थीं। छत सफेद संगमरमर की थी और दरवाजों पर सोने और हाथीदांत की पच्चीकारी थी।

मन्दिर के चारों ओर चौबीस सीढ़ियों के ज़ीने थे। मगर सबसे सुन्दर हिस्सा वह था जहां डायना की मूर्ति रखी थी। लोगों का ख्याल था कि यह मूर्त्ति आकाश से गिरी है। सम्भव है यह बात सच हो। क्योंकि कभी-कभी सितारों के टुकड़े टूट कर पृथ्वी पर गिरा करते हैं। वह मूर्ति भी कोई ऐसा ही पत्थर रही होगी जिसे किसी पत्थरकट ने सुन्दरता से काट-छांट कर डायना की मूर्त्ति बना दिया होगा।

इस मन्दिर में जो मनुष्य पहुँच जाता था उसकी पूरी रक्षा की जाती थी। और उसे किसी प्रकार भी हनि नहीं पहुँचने दी जाती थी।

जंगली जाति के हमले के बाद यह मन्दिर फिर बनाया गया मगर इस बार इसे ईसाइयों ने ढहा कर इसकी जगह गिरजा बनाना चाहा लेकिन गिरजा बनवाने की अभी पूरी तैयारी भी न हो पाई थी कि एक जबरदस्त भूचाल आया और सब समाप्त हो गया।

६--सिकंदरिया का मीनार

सिकन्दर ने जब मिश्र पर अधिकार कर लिया तो डेनूक्रेटस को बुलाकर उसे सिकंदरिया का एक सुन्दर बन्दरगाह बनाने की आज्ञा दी। यह वही डेनूक्रेटस था जिसने डायना का मन्दिर बनाया था। डेनूक्रेटस का एक शिष्य था जिसका नाम सोसटराटस था। गुरु जैसा योग्य था वैसा ही उसका शिष्य चतुर था। सोसाटराटस भी अपने गुरु के साथ मिश्र चला आया। मगर उसे एक यूनानी लड़की से बहुत प्रेम था। वह रात-दिन उस के वियोग में उदास रहा करता था। अन्त में इन दोनों का विवाह तय हो गया। मगर ईश्वर की इच्छा कुछ और ही थी। जब वह लड़की अपने मां-बाप के साथ यूनान से मिश्र आ रही थी तो इन बेचारों की नाव समुद्री तूफान आने से एक चट्टान से टकरा कर टुकड़े २ हो गई। सोसटराटस को जब यह समाचार मिला तो उसे बड़ा दुःख हुआ और उसने सब काम-धंधा करना छोड़ दिया। गुरू को भी अपने युवक शिष्य के दुःख से बड़ा कष्ट हुआ। उसने सोसटराटस को समझाया कि भाई जो कुछ होना था हो गया, बेकार रोने से क्या लाभ। क्यों न तुम कोई ऐसा काम कर डालो जिस से लोगों को भी फायदा पहुँचे और तुम्हारे प्रेम की यादगार भी सदा के लिये कायम हो जाये। तुम समुद्र के किनारे एक रोशनी का ऐसा मीनार बनाओ कि उससे आने-जाने वाली नावों को रास्ता खोजने में मदद मिले और फिर कोई नाव पहाड़ों की चट्टानों से टकराकर नष्ट न हो। सोसटराटस ने अपने गुरू की बात मान ली।

उस समय बैतमूसा मिश्र का शासक था। उसे जब यह समाचार मिला तो उस ने सोसटराटस से कहा कि मीनार बनाने में जितना भी खर्च होगा वह मैं दूंगा। वह एक

विशाल मीनार बनाने की तैयारी करे।

संगमरमर की यह सफेद मीनार चार सौ फुट ऊँची थी। इस की कई मँजिलें थीं। हर ऊपर की मंज़िल निचली मंज़िल से छोटी थी। ऊपर की मंज़िल में झरोखे और खिड़कियां थीं जिन से नावों को रोशनी दिखाई जाती थी। इस के अलावा एक बहुत बड़ी लोहे की टोकरी में आग जलाई जाती थी ताकि नावें भटक न जायें।

पन्द्रह सौ बरस तक यह मीनार नावों को रास्ता दिखाता रहा और लोगों को सौसटराटस की प्रेम-कहानी को याद दिलाता रहा मगर फिर एक ज़बरदस्त भूचाल आया और प्रकाश के इस मीनार को धरती माता ने अपने पेट में समा लिया।

संसार में प्रकाश का यह पहला मीनार था जिस की नकल बाद में कई जगहों पर की गई।

७—रहोडस का देव

आपने किसी कबाड़िये की दूकान पर आधे-पौने दामों में लोहा बिकते देखा होगा। बिलकुल इसी तरह दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक के टुकड़े-टुकड़े करके उसे बेचा गया है। यह आश्चर्यजनक चीज़ रहोडस की विशाल मूर्ति थी। इसे रहोडस के द्वीप में सूरज देवता की याद के लिए बनाया गया था।

जब इस मूर्त्ति को बनाने की बात तय पाई तो बात की बात में रुपयों के ढेर लग गये। महात्मा ईसा मसीह से तीन हज़ार बरस पहले शेरस नाम के एक प्रसिद्ध कारीगर ने यह काम अपने हाथों में लिया और कुछ ही बरसों में यह

विशाल देव तैयार हो गया। सारी मूर्ति कांसे की बनी हुई थी। और जब सूरज की किरणें इस पर पड़ती थीं तो वह चमक उठती थी। इस मूर्ति को बनाने में लगभग तीन करोड़ रुपये ख़र्च हुए थे। शायद आप सोचते हों कि भला ऐसी भी क्या कांसे की मूर्ति थी कि जिसके बनाने में तीन करोड़ रुपये लग गये! लेकिन यदि आपको यह मालूम हो कि यह मूर्ति बड़ी कितनी बड़ी थी तो आपका आश्चर्य दूर हो जाये।

इस मूर्त्ति की दोनों टाँगों के बीच ११२ फुट या ३७ गज़ १ फुट का फासला था। उसकी एक टाँग बन्दरगाह के एक किनारे पर थी और दूसरी दूसरे किनारे पर। इन दोनों टाँगों के बीच से एक बड़ी नाव बहुत आसानी से निकल सकती थी। इस मूर्त्ति की एक उँगली इतनी बड़ी थी कि मैं या आप हाथ फैला कर अगर उसके चारों ओर लिपट जायें तो भी उसका घेरा हमारी गोद में न आता। इसीलिये इस मूर्ति को देव कहा जाता है। मगर दुःख की बात है कि यह मूर्ति अपनी जगह साठ बरस से अधिक न रह सकी। एक भूचाल ने उसे गिरा दिया और वह नौ सौ बरस तक वहीं पड़ी रही। फिर लोगों ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये और धातू को दूसरे कामों में लाने के लिये उठा ले गये। ज़रा सोचिये कि इस देव के टुकड़े ले जाने के लिये कितने ऊँटों की आवश्यकता पड़ी होगी!

साधारण ज्ञान

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद निम्नलिखित पुस्तकें पढ़िये। इनके पढ़ने से आपका ज्ञान और पढ़ने का अभ्यास बढ़ेगा

१. बिजली की कहानी, भाग १, २
२. रेलगाड़ी की कहानी, भाग, १, २
३. हवाई जहाज की कहानी, भाग १, २
४. रेडियम की कहानी
५. ऐटम बम की कहानी, भाग १, २
६. संसार के सात आश्चर्य, भाग १, २

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य पाँच आने

मिलने का पता

मक्तबा जामिआ, लि०, जामिआ नगर, देहली

कार्नेशन प्रिंटिंग वर्क्स, फतेहपुरी, देहली।